

DPN 5755

Title : रसमंजरी RASA MANJARI

Run. No. 6446

Cat. No.

Micro. No.

Subject चिकित्सा / Medicine

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

Size in cms. 29 x 8

Folios 34

Lines (in a page) 7/8

Compl. / Incompl.

(missing 1-6, 9, 16, 39,)
Chapt. / act /

2, 7, and 9.

Author / translator प्रणित वैद्यनाथ, शालिनाथ

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

0

Cms.

5

10

15

20

શ્રવ ગ્રન્થમા હું વિષય દર્શાવું / content list of this MS codex -

ઉપાસ અધ્યાય ૩

ગાંધક ભેગ

અમુક શોધન

વિષયલક્ષણ વિષયભેગ વિષયપરિહાસ અધ્યાય ૪

ધ્યન શોધન માણ અધ્યાય ૨

નૃત સંજીવની હાસ (પત્રાક્ર ૨૩૬)

વિશ્વાધાર હાસ (પત્રાક્ર ૩૨)

મકાદ્યજ હાસ (પત્રાક્ર ૩૪)

હાસ કથન અધ્યાય ૬
દિવ્ય રસાયન મુલિકા અધ્યાય ૭

વીર્ય સામ્રાજ્યાદિ કૌતૂહલ બલ નિમ્નુદ નિવાળ અધ્યાય ૯

: eltiT

15

४४ बुनर्गधचूर्ण ४४ सवीजवद्धा अधिक यरावशा न सवीर्यविपाकपूर्विद्या स्मृत्तं सध्वसमम् ॥ सविता सोमदादरुता गमनाभय
कल्यता ॥ कृष्णार्तु कर्कटी वैव कर्लिर्गका न वैल कम् ॥ कसुरिका वक क्रीटी कदली का कमावी का ॥ नूका नाष्टक मगद्विवर्द्ध
यडसर क कशा हिम मझा वृद्धु ग्ना द्यौः शल्य नैव विलिषाशा ॥ शक्यो न त्रैर्वैवा मुमद्य ना दैव विलिषि कमां सध्व वैना गत्रै मूर्कय
अमृतानि ररुयत् ॥ अर्थं गम मुना ग्रीया यथैव सुखा मूना ॥ नूय यो रन स य नै स्वा नूक सा विर्या रनत ॥ वृद्धि ४ पुजा वल ॥
काकि ४ पुरा वा वयस सुधा वृद्धि ४ न गसा निर्य रस सवा विधौ न नम ॥ यस्य नाग सुन व सह या जयता ॥ न से डा रु न न ना ग
नन की ज न वा जिना मा मूर्किता हत नि नूत वैध न मरि रूय मूर्कि दा रु वति ॥ अजनी क ना गि हि स न ४ का च ४ क न न क न रु
स्माग ॥ ॥ गि जी वै य प वि न ना थ य ग्ना लि ना थ वि न वि न स म ज नी गु नू न स जा न त मा न ल क थ न नौ दि ति या ध्या य ॥ ॥

स्योयोग ३

म

७

अथ ६३ य न स बुद्धि माह ॥ गन्धकै व रु वै कान्क ग गनं गाल कं जि ला ॥ अर्थं नै गि वि रु र्क व वि म ला ह म मा कि क म् ॥ को सी र्म कान्क या षा दी व र्
टा ज न हि गु ल मा ॥ कं क र्क शी र्व रू ना ग र्क क र्क व जि ला ज उ ॥ अर्थं ड य न सा ड का ४ ८ म ध्या डा या श्व मा न य न ॥ ग ना दोग ध का त्य र्कि क थ
न ८ म ध न यु का न ॥ अथ ग दी य पू ना दे या ४ की उ र्था ४ पु र्ण न क श की ना र्क वै उ सा र्ग या र्क कू र्ण न ज सा न्वि ती ॥ धो र्ण य म वि न त सि न
गन्ध व रु ध कै स्मृ त मा व रु द्वा गन्ध क ४ वा का र क पी ता सि ता सि र्ग ॥ न को रु म क्रि या कु ४ पी न र्थ व न सा य नो व न दि ले व न श्व त ४ ८
४ क र्क ४ सु द र्श र ॥ अथ ग र्ध क र्क र्कै उ क र्कै मा र्ग र्म पि रु नू जा क ना ति ॥ नू र्प सु र्व वी र्य व ल नि रु कि न स्मा त्स ४ वि वि धि या ज नी
य मा सा क रा लु य य श कि श्वा मूर्ख व र्मै न वै ध य न ॥ गत्य ४ र्ग ध क र्क श्वा ज ना र्कै न व ना ध य ना रा तु नि क्रि य रू म्प ४ इ र्ध र
य र्क ल म् ॥ ग न ४ की न रु र्ग र्ग ध ४ र्ध या ग म्प या ज य न ॥ अथि ना न स ना ज ४ स्मा रु ना म त्य न जा य रु ॥ अग्नि र्म दी य न लु ख वी र्य व र्द्धि ॥

0

Cms.

5

10

15

20

25

30

कनामग॥ ॥ अथ गंधर्गलम् ॥ अर्कं क्षीरं सूक्ष्मं क्षीरवर्णं लवणं सुकृष्णं गंधर्गं नवनीतं नयि दूधं नवलापिती ॥ तद्वन्मुद्रति
तयूक्ष्मादलं क्षीरं यमध्वमरुचम् ॥ गंधर्गं तस्य ध्वरा लुप्यं श्रीया लघूया जयता ॥ ॐ गंधर्गं तलम् ॥ अथ गानका ४ वीरक
श्राद्धिजाया वज्रानयशस्त्रीयं नयसकं धनिलकं ननडलकयता ॥ वरुणं रुलकसम्युक्तं सुजावना वरुणं ता ॥ यनकास
माख्यागानेरया विन्दुविकर्जिता ॥ नखा विन्दुसमायुक्ता ४ वरुणा ॥ सुजावना २ मीयामता ॥ शिकान्मपणवदीर्घा विरुया सुनयसका ॥
सर्वेषां प्रवृत्त्या लब्धवेधका नसर्वधक ४ मीवर्जं दहसिद्धार्थकमनस्या नयसकं ॥ विद्यानसायनया क ४ रुक्षिया भागमासनः
। वादादोर्वेधजातीया वय ४ सुखं उनीयकम् ॥ मीउमीनीयदा तया कीवकीर्वतथववा सर्वेषां सर्वदा ४ यथा ४ पूरयावल
वरुणाः ॥ ॐ निवहन्तम् ॥ पाण्डुरोगं पाण्डुपीठं किलासदाहसन्तमिम् ॥ नागनीकं गुन्धर्वं वधकं वज्रमध्वनिम् ॥

15

१०

(धेष्टपुटगुयमातद्वत्यनर्वातीनेष्टकासमर्द्धनसंस्थथा॥ नागवासीदलजलेष्टसूर्यकीर्णष्टपृककथक॥ दिनीदिनमर्द्ध
 यिस्त्रानकाधेष्टवृटजोडुर्वेष्टादखापुटगुययुग्मभिष्टपुटगुमसलीदवेष्टागिस्त्रोक्तकषायनभिष्टपुटद्वानतीनेष्ट
 ॥ मायाकदनसंष्टपायाविवातकीकिलोक्तुर्जेशनसंष्टपुटगुमोक्तकीनधुकीतादकपुटगुयथा॥ दध्नाधुननमधुनास्त्रक
 यागितयागथा॥ नुकमकपुटदद्यादगुस्थेवमगिरुवतासर्वनागहर्नयामजायगोयागवाहकम्॥ कामिनीमददय
 ध्वंजस्तुपुस्त्रापघातिनामा॥ वधमायुष्टकनगुक्तुवद्विर्गानकातलम॥ अथा-यच्च॥ इष्टगुयैकमार्यमूर्गगपुर्नृसुगुव
 म॥ वद्वुगुमजातक्रमेष्टिर्नृसुमद्विगम॥ गतिधपुटिष्टरुसजायगेयमतागवत्॥ निष्ठिडिकैरवेष्टुनुष्टुद्वदहनसा
 यनम्॥ निष्ठिर्नुमात्रिगोयामनूर्यवीर्यदृष्टीननृमा॥ कृत्तनागय-मर्द्धजगतागकदम्बकम्॥ लयगुमात्रलम॥ अष्टुष्टगान

01

02

लमायुष्टकदमात्रमदकम्॥ तापेष्टाटोमसंकावकृत्तगनजधयत्॥ अष्टुष्ट्याकालकंस्त्रिर्नृक्यानुगलिलगन॥ चक्षु
 दकपृथक्केलैरस्मीरुगानदाधकम्॥ तात्कोहनगतागमनृकृष्टमरुजतादिकान्मुष्टुष्टुष्टकानितीर्यचकनाख्याय
 त्विवेष्टेनमा॥ ००॥ गितालेकगुद्विष्टा॥ अगस्त्रिपुगुगोयनराविनासकवानकम्॥ अगवेष्टनसेष्टोयिगुद्विष्ट्यागिमन॥ गिलाकद
 स्त्रिगुजिलागिकाकरुध्वीलखनीसता॥ रूगावगलयैरुनिकार्णश्चसहनागुगा॥ मन॥ गिलागुद्विष्टा॥ सफाहंस्त्रिदिन॥ अ
 ज्ञानसकाननवानिना॥ रययैरगुद्विष्टा॥ ॥ उंनोविष्टासमंउक्तंस्त्रोदंटाकागद्विष्टा॥ गिष्टवेष्टुष्टिगुद्विष्टाकिशक्तिवि
 वक्तिगम्॥ उक्तकीकदुसज्ञानकषायविगदलद्यालखनंरुदिवरुष्टयैकनूकिमिविवापदम्॥ उक्तुष्टुष्टिष्टाज्ञमीनस
 तसस्त्रिनामषष्टीगीनसथका॥ तलागायेथवायायाविमलागुद्विष्टागुपुजन्॥ ००॥ गिष्टिष्टिष्टागुद्विष्टा॥ सिंष्टुवस्यराज

15

११

कर्क गिरगमादिकस्य व॥ कृत्वा गदायस पाश लाह्या ववालयत॥ ॐ निमादिक लभधनम्॥ मादिकस्य वतु धर्म
 दत्ता गंधविमद्वेयगाडनू कस्य नैलेन गत ४ कथो सुवकि काम॥ सता वसं य ६ क द्याय ६ ऊजयूटनेन वा सिद्ध तारं
 रव ६ स्म मादिकस्य न संगय ॥ मादिकीतिक मधुन मेहा १४ कय कस्य नूत॥ करुचिरु रुने वल्य याग वादिन सायनं॥
 ॥ मादिक मातनम्॥ ॥ सकृद्गम म्भूना सिर्न कासी सं निर्मो रवेत॥ कासी सं नीत ली सि र्वी सि नन ग नूजा परम॥ यिला
 यग्मा नगमने न स वेहुन का न कम॥ ॐ नि कासी सुष्ठु द्वि ॥ ॥ लव न्मे नि तथा क्रा तो सो रोज न स क्रिये न॥ अ सुव गभये न न
 दिन द्य मे नि धय य ॥ तड वेदो लिका र्ये गु दिव सं या व य सुधी ॥ कानि पाषाण गुडो तु न सकर्म समाव न॥ ॐ नि का क
 पाषाण गुडि ॥ ॥ यी ता रा य किला व ४ दी धी री ता व ना डि का सा र्व नि र्क र ता गु ष्ठा नि र्क रा ता ग्य म ध्य मा वा दा न नि र्क र

10

७

नाश्व क नि द्या १ य नि की र्ति ता १ न सर्व ध्ये वि नि र्दि क्ष सा व ता व र सं रू का वा ना वी का जि के सि ना मा मा न्गु द्वि म वा प्र य श य
 नि न्मा मा दि १ १ ल धी गु रु नी क य ना जि नी ॥ क दू स्मा दी य नी र द्या न ग्रा वा न क दू य रा ॥ त स द्वा ज्ञा न १ १ य का वि १
 १ य वृ क न स्य गा ॥ ॐ नि व ना १ गु द्वि ॥ म वी की त १ द न द स व १ १ ता वि न्मा ॥ स क वा र्ने य य ल न गु द्वि मा या नि नि श्वि र्
 नि का र्हे हि गु र्ले ड र्थ न स र्ग ध क र्म र व म ॥ द म क र्म र्म र्म र्म व ल्य म ध्य धि व द्ध न ॥ ॐ नि द न गु द्वि ॥ १ म द्वा गु रि रु ला र्ग
 १ र्व १ पि र्दी गि ला ज १ १ दि नै की ला ह या गु व गु द्वि मा या स्य र्ग र्ग ॥ जि ला ज १ १ वे लि क क दू र्म व र सा य न म ॥ क य १
 १ क द न र्म सि रु नि वि सि र्ज ज य त ॥ ॐ नि जि ला ज १ १ १ सो वी नै र्क नी र्ग र्ग र्ग क र्म १ १ त्रि र्क र्ग ॥ १ ग व ना व
 १ १ ध्म रा व य र्दो ष व र्जि ता १ ॥ ॐ र्थ य न स १ १ धन म ॥ स द्वा र्म ना ग मा दा य वा त य जि र्म नै वृ ध १ १ अ थ वा कू र्क र्क र्क र्क

0

cms.

5

10

15

20

25

30

[illegible]

महिकादीनिसर्वलोहगतानिव॥अन्यानियानिसाध्वानियामसत्त्वस्यकाकथा।यथावतसरागमस्मिन्सगत्सत्त्वयाजनम
॥करुण्यंगदुत्ताधिकासिकगानिज्जिगात्माना॥ॐनिसत्त्वयाजनम॥॥अथमनिज्जिगात्मानमात्रम॥गुह्यत्वेनमात्र
निर्यजयत्योमोकिंकंनथा।विदुर्मकात्रवर्जितगार्थी।अद्वयगमथा।यथागार्थसंधनं॥कलकृत्क्राथसंयुक्तं॥गर्ह
गुलीयत्तजलेवडीनीलीरसनव।रात्रतासिध्वममदवर्जयंगिरुत्ताजले॥लकचडावसंविष्टं॥जिलागंधकगालकं॥
॥वज्रविनाश्रनानिमियनेवर्हं॥वज्रवर्धनातनारुन्ध्यायलक्ष्मीविषायहम॥॥ॐनिज्जिगात्मानमात्रम॥गुह्यत्वेनमात्र
नाथविनविनसमस्तगुह्ययत्रसंमध्वनमात्रमसत्त्वयाजनमनिमात्रकथनंनामद्वितीयः॥३॥अथविषय
ज्ञानविषयसंविषयनिहृतकथनमाह॥असदगविषयंरूपंकांदर्शयान्तीकालितम्॥कालकूटंमयूनाख्यंविन्दुं

15

सकुकीगथावालकीवसुनारवगखनारमुमङ्गलम् ॥ ग्रीमकैठकीमरु कर्षूतयक्कतमनिषी ॥ हात्रिडहत्रिर्व
 कीविषरुलाहलाक्यमाघनैरूकवकठिनेरिनीजनसमयम ॥ कदाकारसमाख्यातिकालकूटमहाविषम् ॥ मयूता
 रंमयूतारखविद्वद्विद्वकीसमम् ॥ विगमत्यलकीकारसकुकीसकुवद्वेत् ॥ वालूकीवालूकाकारवसुनारुडया
 तुनम् ॥ गीरवनारुगीरवनीगुरुवर्षसमङ्गलम् ॥ घनगुरैवनिविठुग्रीकाकारवगदिकम् ॥ मकैठकचिवद्वीरक
 द्दसकद्विमयूरम् ॥ मरुकीमरुकाकारवगदिकमीवकर्वनम् ॥ यक्कनीयक्कनीकारनिरयीगिरिवायूरम् ॥ हात्रिडकी
 हनिडारुहत्रिर्वहनिस्मगम् ॥ वकाकाररवचकीमीनवर्षरुलाहलम् ॥ वाक्कनश्याभुनरुगुगुगियानकवर्षकशर्व
 शयीनपुरशुडशकशालोनिदिगशमगशावाक्कनादीयनगोणकगियाविषरुलावैष्णवाधिवसुसर्वसूर्यद

73

10

5

लषुगुदकम् ॥ निविषलरुनम् ॥ विषस्यलरुनीपाकमथसर्वीयवक्कह ॥ गीतडीकावसुनेववर्षोसवनदावयतावड
 मोसहनेडाभनूकखल्लादिकानयि ॥ पुथमसर्वयमागद्वितीयसर्वयययमा ॥ गनीयववर्षोववर्षमदिवसग
 थावववसकमवापिकुमवृद्धाविवद्वयता ॥ सकसर्वयमार्गेनपुथमसककनयेता ॥ कुमादार्हसुथनयद्वितीयसक
 कीविषम् ॥ यवमार्गसुसुस्कागुडामाणुकववता ॥ अगतिर्यस्यवर्षोनिवसुवर्षोनियेस्यव ॥ विषतर्षनदागवीदकवद
 वकारकमादागवीसुर्वीगवृद्धागिनिहिगागिनी ॥ कीगगिनिपुयूकीवतसायननगनरा ॥ वक्कवर्षययधनवविष
 कर्षसमावनता ॥ यल्लेश्वरसुमनाखलागदासिद्धिर्नैसगयशा ॥ निविषसवा ॥ मागधिकीयदात्यक्कायमादाह
 यद्विषमा ॥ अर्षोवैगसुर्ववैवजायनगस्यदहिनशपुथमपुथमावैगमद्वितीयावयथरुवता ॥ दाहावैगनीयस्यावउथ

0

cms.

5

10

15

20

25

30

15

मर्त्येऽयं विवाहः नरा विनां सूर्यस्य लवण्यं कान्तं मण्डपं च यत्पूठ पाकगण ॥ १ ॥ मण्डपं च नमः ॥ २ ॥ पुत्रं पुत्रं समं ह मखलं कुर्याच्च ॥
 लकमः ॥ ३ ॥ अर्धं धर्मं दत्वा सर्वं तुल्यं निभूय च विनिर्दिष्टं तालं दयं पठा स्यर्वं वदुर्द्विगं ॥ ४ ॥ निवर्त्तयते गं सैर्गंधं दयं
 पूतः पूनः ॥ ५ ॥ अथ ॥ ६ ॥ कृत्वा कंठं कथं धीनिस्त्रुपगालिले पथे ॥ ७ ॥ लं मस्य रसं सुगनं मियते दगलि ॥ ८ ॥ यदं ॥ ९ ॥ अथान्यथुका
 नः ॥ १० ॥ तस्य रसमना वाधनं सेना लेय नदली ॥ ११ ॥ तुलसिद्वनं लो ॥ १२ ॥ सा म्येन काययग ॥ १३ ॥ समर्थका वनजा वेदिनं कथा थगाल
 कम ॥ १४ ॥ गिरा ॥ १५ ॥ स्यात्तं ले ॥ १६ ॥ खरं स्मरि ॥ १७ ॥ पतिपूतयग ॥ १८ ॥ अग्निं य कालयं जाठं द्विनिर्गं खीगणीतलम ॥ १९ ॥ उद्धृत्य सावला ॥ २० ॥ य पनद्वयं
 पूठं दयम ॥ २१ ॥ अनेन विधिना खनं निवर्त्तयते गं मगम ॥ २२ ॥ उत दसाय नैव ल्यं वृथं जीतं कया विजितं ॥ २३ ॥ अथ ॥ २४ ॥ गालितस्य सर्वं
 स्यात्तं लीला तसी सकमा याजयि त्वीमम ॥ २५ ॥ यनि म्नीत नमद्वयमा ॥ २६ ॥ नीलकं समं गंधं पूर्य दत्वा शाय ॥ २७ ॥ अथ ॥ २८ ॥ गाय

10

लययेत् ॥ २९ ॥ अमुपि द्विगुणितं म ॥ ३० ॥ कदापय दली ॥ ३१ ॥ वीजनी कलनं ह ॥ ३२ ॥ गं ॥ ३३ ॥ यामं व वदुर्द्विगं ॥ ३४ ॥ रसी र्गं गमय रसं च ॥ ३५ ॥ गाय याज यत्त ॥ ३६ ॥ अथ ॥ ३७ ॥
 जीवीनसं संपिष्टं न सगंधं कलेविनी ॥ ३८ ॥ तुल्यं पं सना व र्त्तयते र्गं गिरा ॥ ३९ ॥ मगम ॥ ४० ॥ गार्गीतिका ॥ ४१ ॥ मधुनं कया र्गं जीतं लं सम ॥ ४२ ॥ करुपि रु कयं वा ॥ ४३ ॥ कुरु
 ध्रुवतसायनमा नागये कूलमगं सि ॥ ४४ ॥ कर्मिडागतिर्यथा ॥ ४५ ॥ अग्निं ॥ ४६ ॥ गाममावतम ॥ ४७ ॥ नाजनीति ॥ ४८ ॥ सुथाद्यं ॥ ४९ ॥ गामवन्मा नयत्यथक् ॥ ५० ॥ गामवतं ॥ ५१ ॥ मधनं ग
 गामवदुनं कावकम् ॥ ५२ ॥ अग्निं ॥ ५३ ॥ गाममावतम ॥ ५४ ॥ ॥ नोर्वं ॥ ५५ ॥ गेवगलिगो नविदुः ॥ ५६ ॥ नसेवयग ॥ ५७ ॥ विवार्त्तं ॥ ५८ ॥ द्विमायातं ॥ ५९ ॥ सक्रिडं ॥ ६० ॥ हठिका न ॥ ६१ ॥ अग्निं ॥ ६२ ॥ नागर्वं
 मधनम् ॥ ६३ ॥ गिरिर्गं ॥ ६४ ॥ पूठं ॥ ६५ ॥ गो ॥ ६६ ॥ वासाय दविमर्दिनः ॥ ६७ ॥ सगी ॥ ६८ ॥ रसमा मतिनदु ॥ ६९ ॥ सर्वं मेरु जिग ॥ ७० ॥ अथान्यथुका न ॥ ७१ ॥ रू ॥ ७२ ॥ गुं गमसं ॥ ७३ ॥ विषयार्
 विलेपयत् ॥ ७४ ॥ गनुसं विदुं गना ॥ ७५ ॥ वासाय माग्नी र्गं ॥ ७६ ॥ कानं विमिगं ॥ ७७ ॥ ववुर्धं ॥ ७८ ॥ गुनं किगं ॥ ७९ ॥ यदं ॥ ८० ॥ पाव ॥ ८१ ॥ यं ॥ ८२ ॥ वासादर्थं ॥ ८३ ॥ वदुर्धं ॥ ८४ ॥ गतं
 दृष्टं ॥ ८५ ॥ वदुर्धं ॥ ८६ ॥ वासादर्थं ॥ ८७ ॥ वदुर्धं ॥ ८८ ॥ वदुर्धं ॥ ८९ ॥ वदुर्धं ॥ ९० ॥ वदुर्धं ॥ ९१ ॥ वदुर्धं ॥ ९२ ॥ वदुर्धं ॥ ९३ ॥ वदुर्धं ॥ ९४ ॥ वदुर्धं ॥ ९५ ॥ वदुर्धं ॥ ९६ ॥ वदुर्धं ॥ ९७ ॥ वदुर्धं ॥ ९८ ॥ वदुर्धं ॥ ९९ ॥ वदुर्धं ॥ १०० ॥

5

तमिलयह नशा सुखाय यालोहं दको जने सुद वालये ॥ यावदु सख्यमायाति तावत्सर्गवर्षवत् ॥ गताउकी कने सर्वे रजदं अत्र वल्गु ॥ नूतने
 नरागवेन रात्रयक ॥ दकप्रतिषका यज्जली वसो निनाय कर्षी गिरस्मय जायग ॥ वं गंगाल सक्कस्य पि क्षुद्र ॥ नमद्वय ॥ नुका ग्वकुर
 वर्ध्वर्क ॥ सफधर सगी यज्ज ॥ वं गीतिका सुक वरु माष दान य कापन मा भेद ॥ अष्माम मद्यु व किमि च्चि मरु ना ज न म ॥ ०० ति वं ग मा व न म ॥ ॥ शि
 हा ला ख गु ल ॥ यति रु ली बा उ ग य न म ॥ तत्क्रा थ पा द ल ॥ ष ड लो रु स्य य ल र्प व क म ॥ क र्त्ता य रा गि त कानि स फ वी र्नि नि ध व य ॥ ॥ व र्पु ली य
 त दा षा गि नि जाला रु सं रा ये म ॥ अथाग्नि ता प त कानि ला रु प गानि नि क्रिय ॥ स र्क काना म् व ना क्रा थ गि ति दा ष ष ष न्क य ॥ व ना व ड नु न्म ल
 हा रु ग वा नि व ड नु न्म ॥ द लो नि ॥ का थ ये ला व द्या व त्या द स्ति ना रु वे ॥ ०० नि लो रु उ द्वि ॥ गु ड स्य स ग ना ज स्य रा ग्य रा ग द्व र्प व ल ॥ द्वा ॥ २ स म स
 न च्चु र्म म द्व यै क न्य का म् न ॥ ॥ या म द्व र्प त ता ला रु स्का य य ला स रा ज ना ॥ आ का र्थ त्रे उ जः ॥ य र्ग व्वा या म द्वा न् रु व ॥ शि दि नं ध न्य ता गि र्म

[illegible]

मनो हवे किं हर्षं क्वाथय वक्रानलो मस्या की लिहला न स नय ठि न या वमि नूतं हवे त्यश्वा दा छ मधू दूता सपुठि न गुड हवे दा य स
मा न स्यात्सु निहिर्ग हल गुय जल नाला थ छ चो द न या दू सफ दिने ध्रु वं ग द हि न का ले वृ द्ध यू व । सर्व म न स न लो ह ध मा त क्म सि र्प य
केश य ध्रु व स्य त्रि र क्म न स य वा नि त न हि न म ॥ गंध कं त्र म गं लो हं हृ ल्यं र्व त्रि म द्ध य न् ॥ दिने की क च का दा वे न द्वा म ड य ठ य व त ॥
खर्व स र्व ला दाना का य मि र्क नि नू त्ति गि ॥ क श्या य सा थ गू ला र्ग ४ कू द पा नु प म ह न न । व य स्यं गु न र व र्ण न र्म म दा ग रा य द म ॥ आय ४ पु दा ३
ता व त् वी र्य क र्ता ना ग स्य ह र्ण य स ४ स क र्ता । अ य ४ स मा न न हि किं वि द स्ति न सा य न ७ वृ त्त म हि ज ना ॥ ७ ति लो ह मा त न म ॥ क
आ नु तिल गे ल व मा धा र्ज ना जि का व थ ॥ म द्य म सृ त र्ध व र्ण ज लो ह स्य स व क ॥ य गु न मा त्रि म म ७ ग गु ल म ७ की कि द का ग स्या स
वै हि म लू न ना ग न्ध र्ध नि या ज य त् ॥ ग ता क्म र्क म कि द ७ ध र्ध वा गी ति वा वि क म् ॥ अ ध र्म ष ष्ठि व र्ध यै त ता ही न वि धी य म म् ॥ द भू र्क का

[illegible]

[illegible]

निर्येजन्ता वल्ली दुर्वनिकानामनमूलं काथयत्यलम् ॥ कटु कण्ठ्यं समायुक्तं वाययत्कुरुग्नयः ॥ वीर्यं गुणं समायुक्तं काकली मूलं भव
 त्कुर्यात् ॥ अथ राक्षसं सर्वं वा निपुणं नयः ॥ माकोन्नीयं चूर्णं स्य गुठिका मधुना कता ॥ धानं यत्सर्गं वक्तुं काशविह्वलानि नी ॥ काशमास्ययः
 काशं काशस्यैः सनागतम् ॥ काशयसेवाभयने काशमध्वयुक्तं नृणां ॥ सलायं हं वलं पसां ॥ काशं वजीवितम् ॥ अथ विलम्बतां नृणां
 काशं मलयतसी ॥ मर्गं कतसः ॥ ॥ पलं कटुं चूर्णं स्य वलं वातदग्निधया भामाषट्कं न कस्यैका जैवीनां द्विभिर्मर्दे यत् ॥ पृष्ठं काशं नाना
 म्ना कनात्थय मूलं मूलं ॥ अतः कर्षं न कयितुं मन्यतां न कुर्यात् ॥ यत् ॥ पृष्ठं वीर्यं यमादा कुरुग्नानि लावण्यं दधयत् ॥ काशिलां काशनादी
 लम् ॥ नृणां गुणं मूलाङ्गतां ॥ काशनाथं वाटलीनसः ॥ ॥ नृसस्यं रसनां हं मवादीनं नयकल्ययत् ॥ द्विगुणं गंधकं दत्वा मर्दे यत् ॥ नृणां
 मर्दे यत् ॥ नृणां मर्दे यत् ॥ ॥ द्विगुणं काशनां ॥ कयदे काशं संपूर्ये कलनं निरुद्धं वा ॥ रात्रौ चूर्णं यत् ॥ कथं कथं ॥ नृणां मर्दे यत् ॥

[illegible]

विशालिशासवर्गेद्यययन्मर्वाथवातलुभाहवेकय॥ नात्रमर्गकनसगाणुद्वसूतिसर्मर्गधस्वन्नागनामुकम॥ पर्यकसूतलुच्यस्यासूताद्ध
मगलाहकी। लासर्गद्धर्मनवेकान्मर्दयद्गजद्वयथापर्यटिनसवत्यास्यचूर्निर्गिरावयत्यथक्॥ जिमुकासकनिर्मुनीववासाः
त्रिष्टुगर्जितशुद्धामुन्मुजयन्त्योश्चमन्निवाक्काथविरक्तशकन्याद्वेज्यसंज्ञार्ज्युनिदावेमुधगिध॥ नृधालुघूषूठयाचिरुवर्तस
मद्रनन्तानन्तवद्वोभेदध्यात्मायमार्जनसस्यडाकक्काधन्यकसंमिष्टमूकलुद्धिक्कातरवेन्। नृयनस्त्रिनिर्नामनसायागस्यवाहकथा
नस्त्रिनिनसशाउल्यासंवूर्तिर्नस्यत्यिष्यलीहिगुलंविषम॥ द्विगुजमधूनादयवातनायामनूहय॥ हिगुलेज्यनात्रसः॥ पानद
नसर्कनालुगुलंटेकनंमुगंधकमू॥ सर्वमनस्सर्मगुर्दकात्रवेस्याद्वेदिनम॥ मर्दयर्लेनकल्कनगमुवाणादनाहिसकाजीनरंज्ञे
सामामवूर्ध्वयत्यनिर्वेसमम॥ मार्धकयनूरवल्गुनरुथेनागयेद्वानमा॥ निदिर्नेर्विषमंतीवमर्कद्विनिवयुर्थक॥ ॥ जगिरी

[illegible]

द्वयम्॥ नवद्वारं महाद्वारं नास्य श्राममाणकम्॥ गच्छेत्तादधिरुक्तीव यथार्थं दयं यत्नतः गीतं गायी चिव श्रान् ०० शुभं न साहितं
॥ जीतं रंजीतं सानाम सर्वद्वारकला न कः॥ गीतं रंजीतं सुखा ॥ स्तुतं गंधर्विषं शुभं धूलं वीरं जिह्वं समम्॥ तत्रैकं द्विगुणं वा
कं चूर्णं गुंजाद्वयं हितीं रंजीतं कस्य मञ्जुहारिनाडा कस्य डवे तथा॥ महाद्वारं कञ्जनाम अष्टद्वारं निकनः शाचकाहिकं द्वाहिकं वशा
हिकं ववयुर्थं कीं विषमं वणिं काषाह रुक्मि सखं न संजयः॥ व्यायामं वयं वार्यं वस्त्रानं वक्रमन्तानि वा द्वातम् कानं सवतया वमवलयान्
रुवत॥ ॥ महाद्वारं कञ्जनाम अष्टद्वारं तथैव गंधर्वमन्तानां विषमं यत्नम्॥ समं तन्मद्वयताल मन्तानां नैस्मद्वयं धशा यत्नयत्कृपिकी
तनमूदयित्वा थज्जययत्॥ सकरिर्महिका वरुं वैद्यायत्वा थज्जययत्॥ पूढं रं यत्नमालनं स्त्रीगणानां समुद्रं तन्मद्वयं गृहीत्वा कृपिकाम
ध्मन्मद्वयं नमकं तः॥ अज्ञाना विगुणं हिं गुस्वद्वि काटं कर्म वयं॥ गुग्गुलुं रं वलयं वनीय वक्रा गायतानि वा॥ मन्त्रि वयि यत्नं व

15

सूक्तनसः॥ तासुर्गधनसुज्जगत्सुदमानितकृत्तनाः॥ समीनयिरुर्जपात्तामुखात्रकमर्दिताः॥ गुडावतुकर्यवास्तनवक्रनहताम
 नाशक्रान्तिः॥ सन्निधौर्गर्तवोर्ययुकाजितः॥ सैनाषयानिर्दिशसिद्धादागतासः॥ सन्निधौर्गर्तवोर्ययुकाजितः॥ सैनाषयानिर्दिशसिद्धादागतासः॥
 धातुगनिः॥ स्यादतज्जालकारवम्॥ निष्कुर्यवमनिवविषयिर्कवचूतयगाज्यरुस्मथशानासासन्निपातनिकनः॥ य
 वगुजामिगारुक्षुदाहुकस्यनसुनवा॥ ॥ ॥ निरुभश्चनः॥ अणामार्गस्यमूलंमुहूर्तविश्वकम्भनजमावर्कलमद्भयित्वाथन
 सन्निधौर्गर्तवोर्ययुकाजितः॥ सैनाषयानिर्दिशसिद्धादागतासः॥ सन्निधौर्गर्तवोर्ययुकाजितः॥ सैनाषयानिर्दिशसिद्धादागतासः॥
 कृतमास्तवावगतासुनाकातामापूर्ययन्निम्डयता॥ सफरिर्महिकावर्षेर्ब्रह्मयित्वायुहलघानसुतुल्यलोहुरसामर्तवगमद्विषय
 मधुकसात्रजलदोर्नकागुयुल्लङ्घिता॥ वीर्यसंवसमासंस्थाङ्गागर्ध्वज्याविर्गविषम्॥ तत्सर्वमर्दयत्वत्वेरावयद्विषनीनग

२३

10

5

आतपसकधनप्रमर्दयघटिकाद्वयम्॥ हस्तयकषायनकदकस्यनसुनवासमुद्रननिर्मेनविजयापन्नुवानित्ताकास्म
 र्कस्यकषायनमृतिवृत्तनसुनवा॥ विश्वकस्यकषायनजालामर्यानसुनवायुर्कसंकेधरायानद्वित्येर्लविरावयता॥ म
 त्स्यामाहिषमयूत्रमगवानाहेसरुर्वः॥ सर्वस्वसमराजनविषमपनिष्पयता॥ विश्वमर्धमंगयित्वाथनकृयत्कृपिकाकेना
 गुच्छेर्कवद्विनीनेतर्जगवत्रनसुनवायुदद्याडागिलतीर्षमाहविस्मतिगमकथो॥ गमुनगालुमाहृत्यघर्षयदाहुनीननः॥ नाक
 र्दगतयकादनासुदाकर्षादमीविधिमासवयनमर्हयित्वाथर्करुगामेर्दुशाशाजनकायदातस्यजायतनागिनः॥ घनाशदध्म
 दनीसिगायूर्कदद्यागर्कसदीनकमापानयानीजितागार्थयदीकृतियदीतगता॥ नर्वकनगमकिः॥ स्यात्तापस्यनसजस्यवासर्वड
 वन्दननसालेयनकृत्तगीतलमा॥ हलिकामन्त्रिकाज्ञागीपूजागवकलायना॥ विधायस्त्राययलुगलेययुननर्मदुशादावृत्तावधि
 लासायकदकावलकीकलेशपीनाडुगकवोलीदे॥ कामिनीयनिर्नरुनेः॥ नम्यवीत्तानिनादाधर्मयनः॥ शर्वेतामर्गशाप

15

जयादुर्बः॥ मर्दयद्याममार्गं युवतमाणावादीकताः॥ वरुणाद्रुहसीरुकिरसः कनकसूदनः॥ अग्निमाद्यतनीयुमः
 सार्वनागयग॥ दधार्त्तदाययस्यार्थगवाज्ञं नकुमववाग्रुहीदाविर्गीतर्कदीपनेयमहिनाद्यवाग॥ यथामधुनवाः
 किंवात्रवपिरुयकायनम्॥ ॥ कनकसूदनसः॥ मन्त्रसूत्रमगसूत्रमगतामृसर्मसमम्॥ अर्चयद्यादिनसार्वनागमावः
 नसाकिपेग॥ उर्वेष्टगमलिमूलार्त्तमर्दययुहनदयम्॥ वनमाणीवटीरुकोनिर्धर्ककीर्तकः सह॥ विद्यावाक्यमणीसार्व
 सकार्वनागयद्वी॥ ॥ वज्रयुगलकटीमधुनवाज्ञेमनिर्वमलसुपादकमार्त्तकनीर्कविषयार्गंधनयाहिद्विवर्षेवि
 मर्दयुजायमानं वटिकीविदध्मन॥ उषानिसात्रग्रहीक्षानागिमाद्यनिहत्याद्रुहसीकपाटशा॥ अग्निविद्यावृत्तुनसद्वरु
 कदधवा॥ वरुहसीकपाट॥ ॥ मूकासूवर्त्तनसर्गधर्कनीमयुकमर्त्तवगुल्यलागम्॥ सर्वेष्टसर्वजयकवृः

२५

10

5

लूमिजिर्गवन्नवराकागि विष्ठाउर्वेमा॥ मर्त्तवकलापद्वर्कडर्कसमर्धला॥ वदिनार्द्धकवः॥ सुखीगगीतातसउवः
 रायाधत्तनवदिमर्त्तनीदर्वेष्टा॥ लोहस्यपाणयनियवित्त्यासिद्धार्वेष्टग्रहीकपाटशा॥ वाताद्रुवायीमत्रियायक
 :यिकाद्रुवायीमधुपियालीशिशा॥ सुषीद्रुवायीविजयातसनकद्रुयमर्त्तयगाग्रुह्यम्॥ कयन्नवार्गसिद्धियुक्ताना
 द्यागिसात्रविधीनसेवाभद्रवर्कङ्गाधउवर्द्धनेगुजाद्वय्याविमहामयध्रमा॥ ॥ अग्नियहसीकपाट॥ ॥ उद्धसर्ग
 मर्त्तवार्त्तगधर्कमर्दयत्सनम्॥ लाहपाणुष्टनात्यकयामर्दगिनायवेग॥ वालयसीरुदधुनत्रयतायवितावेयम्॥
 गिदिनीडीनकका॥ येमर्त्तवर्कङ्गाधउवर्द्धनेगुजाद्वय्याविमहामयध्रमा॥ ॥ अग्नियहसीकपाट॥ ॥ उद्धसर्ग
 हिकाम॥ विगुम्भनसशा॥ ॥ तानमोकिंकहमानिसानाध्वेर्ककलागिका॥ द्विरागर्गधर्क॥ सुगमिना॥ मर्दयदिमाना॥

0

Cms.

5

10

15

20

25

30

15

कयिकुसुमसर्गद्वयगणगणकश्चियन॥पूठमध्ययूटनवतनडडलमर्दयन॥बलात्रसर्दसकवलमपासार्गनसर्गमिः
 आलोधुपतिविद्यामसुधातकीउयवर्तपिपुष्यकमतसुत्रसर्गसप्तस्यत्रिधामता।माषमागुतसोदयामधुनामत्रिवः
 सरुः॥रुच्यासर्वीनसातानगुहमीसर्वकामपि॥कयादागुहनीनामत्रसार्यवद्विदीपनः॥ ॥००॥गिगुहनीवजकयादः॥
 सुगंधीकैलाहविषीविजकयगुकमाचिर्गुयनकायसाउलोकसत्रयधिकम्॥रुतगुणिकटुकींशुल्लसप्ततर्थवव॥गु
 निसमसागनिदिगुल्लगुजउचो॥सुतायौगुहनीमाद्येष्टलेवाद्यमयतथा॥रुसुपादादिनागेषुदिकेयपसस्या
 विजयर्बेवतसः॥ ॥गुल्लनीयउवै॥पिहैसुगुल्लवर्गंधकी॥अधुमर्याहर्गययाहूधनरुस्यगीनये॥दगमूल
 कषायनगावयचुहृतद्वयम॥गुजीद्वयैहृतयागुहिकाअसकरीकिली॥अनूपावतदातयातसार्यमयउमृतः॥मयउम
 नतसः॥ ॥गंधकाष्टगुलीसुगुल्लवर्गंधकी॥अधुमर्याहर्गययाहूधनरुस्यगीनये॥दगमूल

25

10

5

उद्धयेचदिनकिना॥गुजीकैवकुमलवयावत्प्रादेकविजगिशा॥कीताकगकैतासार्दजमल्यत्रयव्यमावतन॥कैवयातपुगर्भ
 ल्यर्थनिर्वातनिवसेसका॥गिगुल्लनीयउवै॥पिहैसुगुल्लवर्गंधकी॥अधुमर्याहर्गययाहूधनरुस्यगीनये॥दगमूल
 हवमाशिकम्॥गालनीलाशूनगुल्लमहिहनीसुमासकम्॥यैयानीलवनेनविवागमकीविमद्वयम्॥बुडीकीर्तदि
 नैकैउरक्षाध्वलधनपवता॥मार्षकमाहुकडावैर्हयदातनाजनम्॥पियलीमूलजीकाथसकसुमन्यावयता॥स
 द्वाखातविकतासुविरुत्वातेरुपकादिकान्॥००॥गिवातनागतसः॥ ॥मुर्गैलाहसुगंधीतालमाशिकम्॥पथ्याग्यावि
 षयुषमगिर्मथैवडेकतम्॥उल्लयवर्गंधकी॥अधुमर्याहर्गययाहूधनरुस्यगीनये॥दगमूल
 आसाध्यानिहृत्पाजुतसावागगजीकगः॥वातगनीकगत्रसः॥ ॥मृगसुगार्कलाहनागुल्लयथ्याविर्गुयन॥माषगुय
 लिहृत्कोउरमुचिरुपुगकय॥असुचिरुककत्रसः॥ ॥तसारविर्गामवलिहृत्सोहैवायकनीर्गमिदिनमेवोतदल्यथ

[illegible]

यकिञ्चलहर्नर्यामं मासमाहर्नर्गसयश ॥ गिनैरात्थातसश ॥ रस्मसूर्तमर्गकात्तञ्जुल्वे रस्मलीलाज ॥ शुद्धवाय्वजिलायाष
जिरुत्ताकोठवीजकम् ॥ कचित्कैतजनीवृत्तृष्टगनाहनरावय ॥ विगद्धानविष्मव्याथमधूयकैलिहसदा ॥ निष्कार्णहर्नमेरु
मेरुवद्धानसामहानामहानिम्बस्यवीजासिपिक्वाकर्षमिनानिवायलगत्तुलगायनघननिष्कृष्टयनवप्रकीकृत्यविवलायहन्मि
हन्किर्नर्गनम् ॥ ॐतिमहवृद्धानसश ॥ ॥ मर्गसूर्तमर्गवर्गमर्गनस्यत्ववागिजिनाशतुल्यगिमर्दयत्वत्वम्भन्मन्मन्मर्दयद्वयशदि
नान्कवाटिकाकर्णमाषमार्युमहर्गल्लयप्रदुवडीनामामधूमहर्गुम्भकय ॥ ॥ ॐतिदुवडीनामत्रसश ॥ गालसर्वहर्गामहर्ग
लाहर्हर्गत्रसम् ॥ हर्गमर्गहर्गगाय्यगन्धुल्लमनगजिला ॥ सीवीगर्देनकासीसीनीलीरस्मातकानिवा ॥ गिलाजत्वकैमूलत्व
ककदलीकंदविगकम् ॥ त्ववमकाठजीककुक्कुधल्लमूलजश ॥ अ्वल्लुजानिदीनानिष्मेरीमधिरुल्लानिवा ॥ रुमाका
हर्नजात्यवर्तुत्तीविषतिन्दकम् ॥ ॥ लिगयालोहकिदेवयूनात्तर्गवगत् ॥ त्वववमीनकात्यस्ययनेनूकैरुत्तयथ
म

कू॥ गेलिन्धावटकाभ्यामुसर्वमकणवृक्षेयता॥ खल्वेतिधायदातयः॥ पुनत्रवीवरावनाशावक्रदश्रीनिवायैर्वीदवः॥
 कासीवनीलिका॥ वात्मजन्मनपतन्निस्वसाविशीतकशकनैजहंगताज्ज्यमयगीनिकिलीहलम्॥ मलयूमूलमन
 यानिमस्त्रिमुश्वरावनाथदातयापूषिकाः॥ कल्पासम्यक्कल्मषवातयासाउकड्डीनयडाहृमडिगास्यवकात्रय
 न्॥ माममागुगिनायाचात्युदन्मध्यक्रसात्रसशपुत्रुतीकीतिहृत्वीवनागकायाविनात्रम॥ द्विमासात्यनत्रयसामयः
 र्थुनराजयेत्॥ गगन्यपिचिलीयनकृष्णानिसकलान्यपि॥ एनरुकिपसुनानीगुनरुकिरुगिसदा॥ नसहर्मगता
 तामत्रसायैषकटीकतः॥ जूनगुहंनरुकातीजिर्वनकनूत्तवका॥ ॥ तसनुर्मगलत्रसशासनगामाशलाहानांकिगुल
 वयलंपल॥ जीवीनामरुगागीरिः॥ सुक्रकृषिषमृष्टिनिशमर्षहयानिर्जडावैश्वर्यकीवदिनैदिन॥ उर्वसकदिनैमर्षत
 ल्लवसुवैदिनम॥ बालकायगुनस्वर्गजिदिनलघुवदिना॥ जोदायवृक्षेयशृङ्गपलंकयाजयद्विषम॥ द्विवर्गचिपली

वृक्षमिष्टसर्वश्वरात्रसः॥ द्विगुंजलहयत्कोडेः शुक्तिमनुलकनृगा॥ वाक्यीदवदार्नवकर्षमाणिविदुनिगम्॥ लिह
 दत्रलुतलनञनृपात्रसुरवायद॥ नकात्रिकगितामाकंयद्वाक्यललाटकाकर्षयद्विगितागस्यकृष्टिनीवविश्व
 गः॥ वलिनावदुदासस्यवयस्यस्यग्रीविमथा॥ उतनृमात्रमिष्टकियस्यल्लभितमाकला॥ यशवर्षासुविध्वनुयायाका
 लिनृगात्रलाहृक्तकालेमध्याङ्गमुकालामुयः॥ सप्तगः॥ सर्वश्वरात्रसः॥ ॥ द्वादशः॥ कर्षितालवकृष्णानृस्यत्रसेयन
 खदयकालिकार्यग्यावलायनविद्ययायन्त्रल्लभयत्त्वस्त्रेसूक्तकर्षदयैकियत्॥ तन्मर्द्यवदवात्रातिनीलार्क
 ऊलीरुवेत्॥ सूदीकोत्रविष्कीर्तकागील्लकोत्रवाक्यी॥ यात्रालग्नूजीकाद्रवकुमर्दक॥ ऊलशकुमार्यमल्ल
 लात्राद्रिलोडयनत्रेवा॥ निम्बखवाग्निडयध्वः॥ पट्टदयैग्यैग्यै॥ सङ्कर्षवृक्षकलिकाहृत्तिकायांनुवात्रयत्॥ व
 थंगमधः॥ सप्तमधः॥ सप्तमधः॥ सप्तमधः॥ सप्तमधः॥ सप्तमधः॥ सप्तमधः॥ सप्तमधः॥ सप्तमधः॥ सप्तमधः॥ सप्तमधः॥

वृक्षमिष्टसर्वश्वरात्रसः॥ द्विगुंजलहयत्कोडेः शुक्तिमनुलकनृगा॥ वाक्यीदवदार्नवकर्षमाणिविदुनिगम्॥ लिह
 दत्रलुतलनञनृपात्रसुरवायद॥ नकात्रिकगितामाकंयद्वाक्यललाटकाकर्षयद्विगितागस्यकृष्टिनीवविश्व
 गः॥ वलिनावदुदासस्यवयस्यस्यग्रीविमथा॥ उतनृमात्रमिष्टकियस्यल्लभितमाकला॥ यशवर्षासुविध्वनुयायाका
 लिनृगात्रलाहृक्तकालेमध्याङ्गमुकालामुयः॥ सप्तगः॥ सर्वश्वरात्रसः॥ ॥ द्वादशः॥ कर्षितालवकृष्णानृस्यत्रसेयन
 खदयकालिकार्यग्यावलायनविद्ययायन्त्रल्लभयत्त्वस्त्रेसूक्तकर्षदयैकियत्॥ तन्मर्द्यवदवात्रातिनीलार्क
 ऊलीरुवेत्॥ सूदीकोत्रविष्कीर्तकागील्लकोत्रवाक्यी॥ यात्रालग्नूजीकाद्रवकुमर्दक॥ ऊलशकुमार्यमल्ल
 लात्राद्रिलोडयनत्रेवा॥ निम्बखवाग्निडयध्वः॥ पट्टदयैग्यैग्यै॥ सङ्कर्षवृक्षकलिकाहृत्तिकायांनुवात्रयत्॥ व
 थंगमधः॥ सप्तमधः॥ सप्तमधः॥ सप्तमधः॥ सप्तमधः॥ सप्तमधः॥ सप्तमधः॥ सप्तमधः॥ सप्तमधः॥ सप्तमधः॥ सप्तमधः॥

15

दिनेः काथेदिनेकं वटिका कनाशा निरुक्ते कंददुकुं सुधुं प्रारिडा कया न सथा ॥ कात्रिडा न सथा गुड्ड सुगं समं
 गंधं चैव मन्ता म कम् ॥ मदिने वा कवी काथेदिने कं वटिका कनाशा निरुक्ते मातुं सुदाखा दत्रिक्ते वगणी धनः ॥
 वाकः लि कथे कस कोड मन्वा ययत् ॥ गणा धन सथा गुड्ड सुगं समं गंधं कनि हलार्ह गवा कवी ॥ रत्ना म
 कनि र क वी मि सुवी डी समं समम ॥ मदि यई गज डा वै रत्न म धी धी वनः पुनः ॥ ३३ र्क कया जि स फा ह न स र ल्प ना त्रि को
 र वत् ॥ म धा र्क निरुक्ते मातुं सुदाखा दन् ल्प ना त्रि ना ययत् ॥ ल्प ना त्रि न सथा ॥ गुड्ड सुगं समं गंधं कान्वा म व ग्म त्रि ना मन्
 न वा कवी वी डी निरुक्ते मन्वा न नी न की ॥ पिउं ग नि र ना व क्रि हं नी क वी नि ला र या था न न स क स मं तु ल्यं च नू य च नि ना य
 ग मा का न पा उ सि न र्वा द ल्प ना म व सु र्धि या ॥ सर्व क व ह न र सा र्थ म हा नो ड ग्म ना न सथा म हा नो ड ग्म ना न सथा ॥
 स का ना म ना कान र्वा स मा कि वा गंध क म ॥ र्ध म क कौ ट की डा र्थ उ ल्यं म द ॥ र्ध म क कौ ट की क द कि क्कां क्का म ना व हि ॥
 लि

३१

10

5

रुध ना र थ य ड य था दिने कं पु वि नू यत् ॥ द ग मी स वि र्ध ना र्क मा व र्ध व र क यत् ॥ न स र का ला गि नू डा र्थ द ग्म ह न स र्ध जि नू
 वि य ली म धू र्थ य क म न्वा न् पु क ल्य यत् ॥ का ला गि नो ड न सथा गुड्ड सुगं दि षा गंधं क मा त्री न स म दि न म् ॥ शु हा न ल्प
 ल क क वा हं ठि का न्त्रि ध य यत् ॥ ग या र स म ना म या उ गु ड्ड स धि य स यि ना ॥ ग हा नु र स ना य र्थ व क्का गि वा गि ना य यत् ॥
 दि या मा न स म ड् ल्य च नू य ल्प ना गी त ल म् ॥ जी वी न स र स र्ध पि क्का न्त्रि ध स क य ड् ल्य यत् ॥ गु ड्ड र्क म ध ना र्क न लि ह ड् ल्य नि र
 ग न्द ती ॥ म्हा ली ल स र्ध ना न्त्रि ध ना ल य र्थ पि व ना र्डी ग म ध ना हा नी दि वा स र्ध र्थ व र्ध न म् ॥ व र्ध य वी त ला हा न र स स्मि न
 वि ना र्ध व ॥ न वि ना नु व न सथा गुड्ड सुगं समं गंधं म र्थ या म व रु र्ध य ॥ ना म व ली द ल य र्थ म र्ध ना द य न र्वा ॥ म्हा गि
 य ली य क म र्ध र्ध य ड् ल्य ॥ लि ह न को ड न सा गो डा गुं जा मा नु र्ध दी ह न म् ॥ नो ड ना म न सथा सु गं ना र्ध म र्थ ला ह य ल्य क
 व य ल ग य म् ॥ ल्प ना र्थ ग ली द नि वि नू कं यी क न था ॥ य ल्य कं दि य र्थ या र्क य व र्ध र्थ व र्ध क म् ॥ उ र्थ य व र्थ या र्क र्ध र्थ

[illegible]

सर्व यथार्थं वव गुरुपलमा ॥ अर्कं कार्त्तद्विनमर्धं सर्वेन ज्ञाले की कृतम् ॥ नक्षत्रं लुधनयाया ल्युटं केन समञ्जनम् ॥ अथर्व
 लज्जना नाम गुरोर्गुत्मादने जयता ॥ द्युत गुजादयले छीनिष्कं ल्युगयेन नैवा ॥ गवां मूर्धं ४ यिव द्वा न न जनी वाग वाज
 लेषा ॥ वं लज्जना न सशा ॥ वात्रेदं जिषि तुर्कं वज्रं पालं पियली समम् ॥ अत्र घृधरुला नम ज्ञावजी इगु न मर्दयता ॥ माषमा
 जी विटी खाद नानी लाम् मूद नै जयता ॥ विवाह लत्रसं वा नृपथ्यं द ॥ ध्यानी हितम् ॥ नकाद नै ह नै व कठिन नै वनेन न ॥ ॥
 उदनात्रि न सशा ॥ पियली मा विगी न मर्का वनी कूर्क संयता ॥ सुही कार्त्तद्विनमर्धं इत्येर्जं पाले वीज कम् ॥ निष्कं खाद दिनका
 यं सख्यं हनि जलादनी ॥ नवनानी उ सर्वे खाद ध्वनं लै ह नै हितम् ॥ अमाने वयदा न वामथ वाम द्वा मुख कम् ॥ ॥ जला कनात्रि
 न सशा ॥ सुगटं कन तुल्यां गमनि वसु न तुल्य कम् ॥ गंधर्कं पियली गुलिठी दो दो ला ॥ मे विचूर्णय न ॥ सर्वे तुल्यं क्रिय द
 नी वीज निमुषि नै लिष क् ॥ द्वि गुजं नै व नै सिद्धं नाना वीर्यं महां न सशा ॥ गुल्फं श्री हाद नै हनि पियरीं वा धु वात्र न ॥

॥ ॥ नानावनसशांशुलिमनिवसयूकानसगंधकटंकनशांशुपालामिगुत्तमशुकाकाः सवेमकगुमर्दिताः ॥ ०० ॥ कारुदीदि
गुजास्यात्सिकगयासहदाययता॥ यावगन्धका नीला तावद्वगन्धिनवयता॥ तकोदनवदागवामिका रुदीय॥ थकयादा
याः कादावित्कया निजितालंघनयावनेषाये गुंसीगन्धनेऽशुद्धानगंधांपनरुद्रवथावालवद्धा वागिसिद्धेऽरुतकीत्स
रयाचिन्ताः शीतक्षुद्रपथिगन्धनागरिनीवनवद्धनी॥ नयुसूताया नात्रीमन्दागिश्चमदास्ययी॥ गल्यादिगन्धपत्र
धानविनश्विजानगा॥ ॥ ०० ॥ कारुदीनसशांशुकाकाः शुद्धगुमस्यपाणालं यलविंगनिः पला निर्ववसूतस्य मर्दयन्निव
कडर्वः॥ तावत्समर्दने कुर्याद्या वेत्सलगतनसशांमल्यागमध्यानिद्रियागस्थाद्याद्यैश्च गंधकम॥ धसत्रयसर्वैश्च ह्ये
त्वायूनश्च तमगिरागिका रयतगुलागमर्कयूनऽयवेत॥ ॥ गन्धमूर्तिविंगनिद्रोतानसमदीजायतनसशांउदनातिकः
मिहयाचिरुनमलसंवयत॥ गन्धमूर्तिनीताववात्रेनगन्धोद्भाकिर्यावक्त्रत॥ यूनर्दिनीयरागिडुगन्धनीनयवक्त्र

नः॥ दण्डवान्तरात्तथागार्यन्त्रीनीकरस्यपावयन्॥ अयंजसप्यात्रसानामसर्वेऽङ्गुलनिवाननशनाशिकृत्तिलकङ्कनीनितःकुक्षु
दिङ्गनथासुखयाकंयात्तुनागंमुखनागंवदान्नम॥ वातघ्नरंयिरुर्जवर्द्धेर्द्धसाधियातिक्रम॥ रुयकागंक्रमिर्वनि
हन्त्यादीपनयनम्॥ पनसृणीयरुगंउकद्वलत्रिकारसंगरावधर्विगानिघ्नीनानवामनानायनेनसः॥ दयस्याद्वल
मार्गंउतावूलीनससंयुग॥ वमनंसर्वदाषष्ठमपवात्रसुपूर्ववत्॥ विशूविकामसुचिरजितानार्थवनागयता॥ किंप
नवेरुनाकेनसर्वेऽङ्गुलहनः॥ यस्याइदीययदग्निगमाइरुयरास्कनशनाजिकालवर्तनानीकषायकदृक्त्येडेगा॥
॥ उदयरास्कनसगास्वर्णदक्षुर्लक्ष्मम॥ दयद्विकर्गंधकम॥ नककप्यासकसूर्मशकृमायहिर्दिनंततः॥
गुष्माकावधधनध्रुवाल्कार्यगर्गहनतात्सुक्योडसंतुस्यनवोर्ककिंनत्सयमम॥ लात्सस्यतागमश्चवान्
कयूत्रस्यवल्गुननाशलवर्गमनिर्वंशानीहर्लकयूत्रमोठया॥ मतयेनगनारिंउगेखानकमिर्गततः॥ रुचिर्

[illegible]

कृताशक्तिविवेकसर्वार्थज्ञानावयवयत। यद्येकंदकसंनृतं नृसंकासस्य वा ययत॥ कस्तूरीवायकव्युत्पन्नक
कोलेलालवंगकी। पूर्वपूर्वदमीसमतनुत्वाविमिश्रयत॥ सर्वसमाजकृताविदध्मेतत्तन्निमित्तंयित॥ अ
द्वद्वियलेनर्षामधुनाहानसवकशत्रुस्यपराकार्यद्विर्गुणवर्तनंजादिवर्द्धन॥ तन्नीतिमयद्वितीतनवलानिश्युजोय
न॥ ॥ ॥ निमदनकासव्युत्पन्नसं॥ ॥ अमलाल्यानेद्वेवर्माद्यैवर्द्धकैर्गुणसुगकी। यामद्वयवचत्रोर्द्धवर्द्धमधमद्व
यत॥ दिनेर्कमलाल्यानीडावेमद्वयिखापटीकृतमा॥ वक्ष्यन्नागवल्याथनिर्द्धेयत्वावराजना। राजनंमलमलीडावेःयु
क्त्यामद्वयवचत्र॥ वालकार्यमध्वनद्वेजील्लेसमद्वयत॥ द्विर्गुणैरुक्तययागत्रागवलीदलानना॥ मणालीसं
निर्गतीनःयलेकपोययद्वेन॥ नसंयुक्तंनानामासंमग्रीयुक्तनारवत॥ कामिनीनांसद्वयैर्कननःकामयतक्षुर्व
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ गुणसुगसंमर्द्धयार्द्धकज्ञानजैर्द्धवः॥ मदिनंवालकायगयामसंयुक्तंययत॥ नकायनद्वे
र्गार्थद्विनेर्कगीनयायतम्॥ यथैर्द्धययज्ञानकामयत्कामिनीनर्त॥ ॥ कामिनीमद्वयजनानामरसं॥ ॥ गुणसुग

15

गधुश्चक्राद्यन्यककुक्षमकाऽस्य श्रीवताऽनसनिन्दकास्य शत्रुलाये गभुसंस्मर्गय कुर्यादसनिन्दकं शयावजन्म
 सहमानिसंरुवदुश्चयीजितः॥ ॥ मिथ्यावलुनर्वेद्यनाथयुगभलिनाथविनविनसमञ्जसीयं धनसकथः
ननामवशाध्यायः॥ ॥ सलम्यनिर्हयनाथं सलुदवजगत्यातिमदिगम्वनजिनतुवत्रतामृत्तानि वातसमा
 अमर्गवविषवैवजिवनाकं नसायनयम॥ अमर्गविधिसेयकं विधिहीनं कुतश्चिषमा॥ प्रवनाकं दं सयैस
 द्वादावापनुरुयासगाजुरकयदा दोमासमकीविवरुतः॥ यम्यसुधाजयद्वहं गुणीकनमिदगा॥ अकुणी
 कनलसुगस्सुमगाविविषरुवत॥ दलसिद्धिकनसुस्यसुवीरस्योपत्रयथा॥ केरुं यो कुरुकननं सर्वसि
 यनसायना न कुरुकनलद्विकिं विलेकयोडसायनमा॥ ससुगं द्विधमर्गं कनकन्याविमदितमा॥ नृध्वतद्युष्टय
 या इदुखमधूसर्योषा निर्व्यादे कृतामर्ये रुकिर्गंधमनानसशासमर्तुंगनाजंतु का यो गुक्विचुल्लयम्॥

36

10

5

नत्समगिरुलाचूर्त्तसर्वकुल्यासिरुवत॥ रुलं कंरु कयम्वनत्रमृत्तजनायदम॥ ॥ नृध्वमनसायनम् मनसुग
स्योदागंरुमरसमयकृत्ययम्॥ नीताक्रमधनामिर्गुमायैकं कानकपात्रकं रुतयन्मायमर्कं कुजतामृत्तनिवा
नकं वाकवीकृष्टकषकध्वनीरुलनसयुक्तम्॥ अनूयानं लिखित्यं सतसाहमर्तुंदनम्॥ ॥ हमर्तुंदनम्
 ॥ ॥ अथगुटिमाह॥ गुडसुगं वज्ररुसं सखेमयकगाययागकानलाहसमर्तुंदनम् जंवीनं मर्दयदुष्टम्॥ स
फाहं सर्वकुल्यां नृध्वमर्कं कृत्यासमर्दुनता॥ मज्जि कृवायसीवध्वानि मुं मुं मेधुसं धर्वगलपयद्वजमृषान
मलकं गुनिक्रियम्॥ नेलकं कं कादिनं रुधाय कं रुधने यवत॥ यामे यामे समर्दु स्यलि श्यामूर्खीयनः प
नः॥ नृध्वथ पूर्ववत्या यमर्दयम्वनसमर्दुनता॥ यवविवा रुलोग कनाजी क यो स न कुलं॥ उनं यु स य य न
मिगुटिका गुनिक्रियम्॥ कं कं नृध्वम कावैव दखा दखा धम दुष्टम्॥ खदिता म नृध्व गन कुना यं जाय न सः

मयगुह्यतानुहन्तियोगीमद्रुवाम्॥दर्भेहन्निवनाहाहुः॥गमनाश्वरसंरवः॥गम्यमकीराधिकनयनसं
 वैर्विबुधयन्॥दन्वलिक्तगणकुमुदा॥नानागिनीयनमाहुः॥मात्रिकसिद्धुक्तगिवागमनः॥नित
 ॥नेत्रिकादधिदुर्लभमत्रिवेदगिबुधयन्॥संयाजमधुनाकुर्यादध्वनोसात्रसक्रिया॥वसत्रागममित्रैकावगुक्त
 दनयत्रमा॥गम्यनारिबिरीगस्यमज्ञायेथमनः॥नित॥पिपलीमत्रिवेदकुर्याववावगिसमांगकम्॥कागीरी
 त्रैतसंविष्वावलिक्तुर्याद्वानिगाम्॥ह्रस्वमागंसंघर्षवलिग्वन्डादयाजयन्॥गुह्यनागदुर्लभसिनगु
 ह्रस्वगंविनिश्रियन्॥कृष्णाननयामुख्यसर्वमेकगुह्ययन्॥दण्मागनकुर्यात्तैगसिनवृत्त्युदाययेनोत्र
 नत्यर्थजननगदजिन्नयनामगम्॥गुह्यायातिगर्लद्विवावृष्यायदीदीयन्॥अवित्रनेवतद्वानिगिमिना
 तिवयाहनिज्ञानगमविनग्वन्निनरुवन्किक्तवना॥गिरुलाया॥कषायतयाननयनध्ववनाम्॥॥अथ

३८

गुह्यनामयः॥सर्था॥कषुवर्त्तुसमाह्रन्॥तस्यासिध्दयत्कष्टाननावीर्यनमवतिविमूक्त॥तिविमूक्तनसिद्ध
 यागददाहनातकायामात्रमूर्त्तुसामवात्रैर्मिर्गिर्ग॥लोमवा॥समद्रथकष्टविध्वुवीर्यध्वका॥अन्यमर्
 ॥विस्मदलर्गुकाथ॥वाग्नगणवेनगुठननिगिगीतगाकुर्यात्ततनयसात्रगवतनविनासना॥अन्यवृ॥सुतनड
 लसीमूर्त्तगावर्त्तुसदृशयन्॥नमवतिगतावीर्यमर्ककननसंगयन्॥॥अथ॥अथुकात्र॥गुह्याजिताया
 मूर्त्तदृढनमर्गुल्यानिपीयत्रिकाले॥विनाकननिहितमना॥कविगयवनग्विजयति॥॥तिवीर्यसंरुनमा
 ॥॥वनाहवसयालिगमधुनासदृशयन्॥सूतदृढवदीर्घवमासंतिगयत्रायन्॥॥तिलिगवद्वर्त्त॥॥अन्य
 क्षपेयनकर्णलीगलीमूर्त्तकाध्वमनिखोपुसवस्तानेवृषावृत्त्येकानिनी॥निगमद्विद्वृत्तुनराविकनाज
 योत्रिन्सायातागनयुक्कनसल्लख्ययननमम्॥सल्लख्येनमम्॥॥नित॥गमरुतयायाग्वृद्धकागीरिध्वनया

15

विनमः॥ जीतैर्लमधनायकैषटनागनैयमः॥ उर्ध्वनाममुयाजी वामधनासदयप्रयगातेनलेययतनासीव
 दुःखेविमूयात॥ ॥ यत्नवनागनमः॥ उक्तवमहादावीमालतीसरवातसः॥ क्रिययदियुक्तमधुकथ्येन
 यानदेश॥ ॥ मुडावनमः॥ मधुसैधवसेयकैवातावनमलान्वितमः॥ उतल्लिकनियतामा दासीवत्कनूततिमः॥
 कपीनियुयंमीसूतकैकुर्मकनवीमधः॥ उतल्लिकनियतामो दासीवत्कनूततिमः॥ मुडावनमः॥
 ॥ ॥ यत्नवनागनमः॥ मधुसैधवसेयकैवातावनमलान्वितमः॥ उतल्लिकनियतामो दासीवत्कनूततिमः॥
 नामगद्गदकुरुनवउद्यमः॥ गद्गदिः॥ क्रापूर्नद्वंद्वलिखितानि स्यात्खिलमः॥ गुरुनकुरुसंज्ञाप्रसाधितमधु
 निधुवमः॥ मियमाकर्षति क्रियुयगुयतनेसंगयः॥ ॥ मुडावनमः॥ यकारुगनिर्लकतामलकक
 रेशयेद्यायिकामिनीकार्मवालवकुरुततिमः॥ ॥ रगसंकावकनमः॥ द्रुतितालवृक्षकालिकासवाकक

५०

०

७

नवात्रिंशस्यशानियतनिकनिवयाः॥ कोउकमिदमकुतमकुरुतः॥ ॥ लोमजाननमः॥ एयमवीरसिगयारुकि
 तायप्रवात्रिंशः॥ दृढंमुलीनसुनद्वंद्वमासनकुरुतधुवमः॥ मुली वृक्षकषायतयतैर्लविकावित॥ यातिर्नयो
 वनयस्थाः॥ यानाकस्याचर्तवत्॥ ॥ कवात्रिकनमः॥ ॥ गुरुतीयकमूलानि चिक्षतालुलवात्रिंशः॥
 नोद्यद्वनिषीमानिवध्मकतलमरुमः॥ काजिकननवापूर्योपि क्वापिवति यीगना॥ यतोयस्यनर
 उतसाधीवत्थवगुरुतामः॥ धरुतमलिकापूर्यग्रहीताकटिसेसिगः॥ गर्गनिवातययवतजवग्धादि
 याविता॥ धूविगयानिर्नधुडेर्विवकाष्टनयूकिशमर्तनमगसा मुीगरुदः॥ खरवि वरुताशा॥ ॥ वधु
कनन॥ ॥ नागकजाननमः॥ नूतं॥ सखियासमी॥ वीतंमुलीनरुतपुगुमनोइगुवराजिनी॥ वि
 निमाउलंगस्यइष्टस्विन्नानि सखिया॥ सगर्गमिगिकेवक्रियाननवध्मगर्गयकदेवतमो॥ यथाधुनल

॥ या मूलं विष्टव क न्यया । सर्वे न घृतरु सुख्य शयी ता प्रा वला युतमा यत नीक रय ऊर्ण कुल लकनम कि
का । मधू का गी यय शयी ता किं ज्य ता डिका तु का । निनि जाति लाग की राय प्र के दद म धू ना चि तो ॥ त । कि
गा वा न य त्य व प त न गर्ह स रसा ॥ सम रा ग लि यू की ज्हा लि गा नु ल रु लू क मा । उ र्ज व न जि ह्वा का थ पि गरु
सू न रु ति ॥ ॥ गर्ह य न न नि बा न त म ॥ मा तु र्नी ग स्य मू ला नि म धू की म धू से य न । घृ न न स रु पा न वी सू र्व
ता ना पु स य न ॥ दु र्वा दू य त्रि घृ ष्ट न के द न प रि ल ये य न । ला ग त्या ज्य न ले सू ति क्रि य मा प्रा ति ग रि ती ॥
सु ख्य पु स व या य म ॥ ॥ वा न वे र्द्य य व स्क्रा मि स मा सा डा वे ल्ना दि त म ॥ पू जा ड यदि ज्हा रा ग प र्ण न दा घृ ल
से न म ॥ य थ म दि व स मा म व र्थे ग्ना जि वा ल के ॥ या गि नी म डि का ना म स र्व र्श व या व हा । क दि मु की क न
की य श ज्हा दी न श्व ना र्ण ज्हा रि नि क्रा फ्त न या ने ष्टा य न सु ख्य ल रु ल म ॥ ॥ द्वि ती य दि व स मा म व र्थे ग्ना

विशालकम् ॥ सप्तकायागिनीनामपुथर्मजायते कनकासुखादनामपि कान्तिकर्तुं ॥ सत्यवत्
कर्मवत्सुखात्सुखान्तकर्म ॥ ॥ एतन्निदिदसमासवर्षगुणानि कान्तिकम् ॥ एतन्निदिदसमासवर्षगुणानि कान्तिकम् ॥
सुखमनुनीतयादीनमार्गस्यपुथर्मजायते कनकासुखादनामपि कान्तिकर्तुं ॥ सत्यवत्
दिगमागिह्यव्यवसायवर्लिनियत ॥ एतन्निदिदसमासवर्षगुणानि कान्तिकम् ॥ एतन्निदिदसमासवर्षगुणानि कान्तिकम् ॥
सुखमनुनीतयादीनमार्गस्यपुथर्मजायते कनकासुखादनामपि कान्तिकर्तुं ॥ सत्यवत्
गिनीकनीनामपि कान्तिकम् ॥ एतन्निदिदसमासवर्षगुणानि कान्तिकम् ॥ एतन्निदिदसमासवर्षगुणानि कान्तिकम् ॥
सुखमनुनीतयादीनमार्गस्यपुथर्मजायते कनकासुखादनामपि कान्तिकर्तुं ॥ सत्यवत्
दिगमागिह्यव्यवसायवर्लिनियत ॥ एतन्निदिदसमासवर्षगुणानि कान्तिकम् ॥ एतन्निदिदसमासवर्षगुणानि कान्तिकम् ॥

[illegible]

वर्षे गङ्गातिवातकम। रुडकाली द्वा गानिडा वामरु सुस्य कम्पनम॥ वदना नू विनिः श्वा सा काययी सा विवहिर्ग
॥ पूर्वदिशि समाजित्ये वलिं दधेयु दा ययना यूनं दनं दि नमा सर्वे गङ्गातिवातकं॥ गानादियागिनी नाम द्वारे
जम्बानू विरुणमा वक्रपी जगत्तस्य प्रथिम वलिमा वनता प्रियं वदिव समा सर्वे गङ्गातिकालकी यागिनी
नीसमुखी नाम स्वासः कासा नू विद्वनेटा नहु सुं विद्र मिह्यादि दन्ति सजा वलिं क्रियता विकाने दिव समा सर्व
षे गङ्गातियागिनी। कृत्वा सानी नयन या द्वे गङ्गा द्वारे कासा दिवहिर्गमा ने जम्बानू दिग्मा जित्ये सफ नागं वलिं
क्रियता॥ तालकं मुयय ल्य ग्वा कानि नायनमनु विगा नदी नी नद्र या कृष्ण द्वाद वी स्रुतं॥ कृत्वा पूजा वक
र्त्तवा येष धूपादि रि सुगन्ध वट काल रुका वयूपा जे गुरु कं गुडं दध्वा वक्रुर्वै वयना काश्व पदी पापूषा वन्द
नम॥ पूजय सर्वे दवी नाम यता क्रुत्वा वलिं। सर्वे गनाम रुदमं॥ ॥००॥ निगले ननुम्॥ ॥००॥ निजा ये निगवे

घनाथपुत्रजालिनाथवित्रवित्रसमंजशीगंथवीर्यसुहादिकोरुहलबालनिगुहनिवातल कथन
 नामनवमाध्यायः॥ ॥ अथकालस्यविज्ञानयुवकामियथासुखी॥ गोविर्तमत्रनीयागोयनायानानितिः
 ग्रयाना॥ कालग्रहस्ययस्यदंष्ट्रासंयुक्तंकेननता॥ अथैववायुगतवासावर्ण्यरुहयिष्यति॥ त्रसंनसाय
 नयागेकालेहास्त्रोसमावतता॥ तस्याज्ञानवथासर्वेनस्मारुवायनधूना॥ दूतत्रिककृष्णवसनादभीज
 टीसंज्ञितसेलास्यकगतीनकायधकतादीनाशुयुष्मानमहारस्मांगत्रकपालवागुमंगलसूर्योक्त
 संख्यादययःगुन्यसत्रसंस्तिगागदवर्गकालायसस्याददो॥ ॥ निद्रुनवस्था॥ अकस्माद्विरुवि
 कतिरकस्मात्पुत्रधारुमः॥ अकस्मादिडियात्यकिं॥ सन्निधानागलकृतसांगनीनलीलयोर्यस्यप्रक
 तिर्विकतिरुवते॥ तस्यानिर्द्वैसमासनयासंनैर्निवाधम॥ द्विषकन्दनेत्रमर्गसाधुनदेनकृष्णियायअक